एक दीपक, जिसने पूरे गांव को रोशन किया

Nikhat Perween

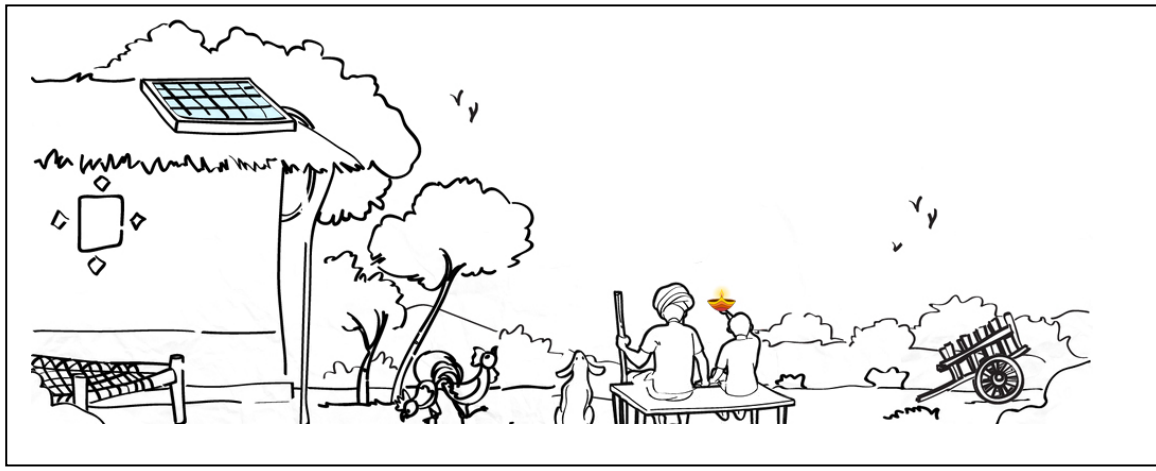

विजय जब 7 साल का था तो उसकी माँ अपनी बेटी को जन्म देते हुए इस दुनिया से चल बसी (अर्थात विजय की मां की मौत हो गई) । तब से विजय अपनी छोटी बहन के लिए सिर्फ भाई ही नही, बल्कि माँ और बाप दोनो है, और क्यों न हो विजय के पिता दिनभर खेती-बाड़ी मे इतने व्यस्त रहते हैं कि उन्हे अपने बच्चों के साथ बैठकर खाना खाने का मौका भी नही मिलता। इसका एक कारण ये भी है कि विजय के पिता दिनरात एक करके खेतो मे मेहनत तो बहुत करते हैं लेकिन उनकी मेहनत के अनुसार हर बार फसल नही हो पाती थी। विजय का ध्यान हमेशा इस बात पर जाता था कि बाबा के दिन-रात खेतों मे मेहनत करने के बावजुद भी फसल अच्छी क्यों नही हो पाती, और मन ही मन वो कई बार सोचता "काश उसे पढ़ने का मौका मिले तो वो कृषि की पढ़ाई करके अपने बाबा के खेतो को हरा भरा कर देगा"।

लेकिन विजय के बाबा ने कभी विजय को पढ़ाने के बारे में सोचा ही नही, क्योंकि उनका मानना था कि किसान का बेटा किसान ही बनेगा और एक अच्छा किसान बनने के लिए शिक्षा बिल्कुल भी जरुरी नही है। उपर से, विजय पर बिन माँ की बच्ची का ख्याल रखने से लेकर घर का सारा काम करने की भी जिम्मेदारी होती थी तो विजय को समय भी कहाँ मिल पाता कि वो रोज स्कूल जाए और पढ़ाई करे। लिहाजा, छोटी बहन की परवरिश और घर के काम करते करते विजय जब 10 साल का हो गया, तब एक दिन अचानक उसकी मुलाकात गांव मे आए हुए 62 वर्षीय आसिफ खान से हुई।

आसिफ खान एक सामाजिक कार्यकर्ता थे और पिछले कई वर्षों से कृषि के क्षेत्र मे काम कर रहे थें। जब विजय को ये बात पता चली तो उसने आसिफ खान से विनती की, कि वो उसे भी खेती के तमाम नुस्खे सिखाएँ ताकि वो अच्छे किस्म की खेती कर अपने पिता का हाथ बंटा सके और उसके खेत पूरे गांव मे सबसे ज्यादा हरे भरे होकर अच्छी फसल दें। इसलिए विजय एक दिन आसिफ खान के घर गया और कहा "मुझे आपसे खेती के नए नए गुण सीखने हैं, क्या आप मुझे सीखाएगें, गुरुजी"। इसपर आसिफ खान ने पूछा " विजय क्या तुम स्कूल जाते हो, पढ़ना आता है तुम्हे? बेचारा विजय इस सवाल पर बिना कुछ कहे वहाँ से चुपचाप चला गया।

आसिफ खान को विजय का ये रवैया बहुत अजीब लगा और वो विजय की इस खामोशी का कारण जानने के लिए उसके घर पहुंच गए। ये इत्तेफाक ही था कि आसिफ खान जैसे ही विजय के घर पहुंचे उन्होने देखा विजय अपनी 3 साल की बहन को गोद मे लिए अपने हाथो से खाना खिला रहा था, पास बंधी एक गाय बार बार आवाज लगा रही थी, कुछ दुरी पर एक बाल्टी के पास कई गंदे कपड़े पड़े थे, घर मे चारो ओर गंदगी फैली थी ये सब देखकर आसिफ खान को सारी कहानी समझ मे आ गई और उन्होने दौड़ते हुए विजय और विजय की

बहन को गले लगा लिया और विजय से पुछा " विजय क्या तुम्हारी माँ नही है"? विजय भावुक होकर फूट फूट कर रोने लगा और रोते रोते उसने अपनी सारी कहानी आसिफ खान को बताई ,आसिफ खान ने फिर सवाल किया "विजय क्या तुम मुझे अपना गुरु बनाओगे? अगर मैं कहुँ तो क्या तुम स्कूल जाओगे"? विजय के चेहरे पर खुशी की एक अजीब चमक भी थी और अफसोस भी, मायुस होकर उसने गुरुजी से कहा "लेकिन बहन का ख्याल कौन रखेगा"? गुरुजी ने मुस्कुराते हुए जवाब दिया, "मैं रखुंगा अपनी बेटी का ख्याल"। "औऱ बाबा"? विजय ने परेशान होकर फिर सवाल किया। "मैं उन्हे संभाल लुंगा "आसिफ खान ने जवाब दिया। बस फिर क्या था गुरुजी यानी आसिफ खान ने उसका दाखिला पास के सरकारी स्कूल मे करवा दिया।

विजय को तो जैसे उस दिन से पंख से लग गए, पूरे गांव मे वो रोज सुबह सबसे पहले उठता, घर की सफाई करता, गाय को चारा डालता, बहन को दुध पिलाता और फिर बन संवर कर निकल जाता अपने स्कूल को, और छोटी बहन को छोड़ जाता गुरुजी के घर पर। स्कूल से वापस आते ही वो सीधा गुरुजी के घर जाता, उनके साथ ही भोजन करता और फिर वहीं बैठ कर अपना सारा पाठ याद करता। इस तरह कई दिन, महिने, और साल बीत गए। इसी बीच विजय की बहन जब कुछ बड़ी हुई तो विजय ने उसका भी दाखिला उसी स्कूल मे करवा दिया। भाई बहन दोनो साथ साथ स्कूल जाते और स्कूल के बाद गुरुजी के घर जाकर वहीं सारा पाठ पूरा करके शाम तक घर आते। भाई घर के उपरी काम करता फिर भाई - बहन दोनो मिलकर रात का खाना बनाने मे जुट जाते। इस तरह विजय ने 12 वीं की परीक्षा पास कर ली। विजय ने उस वर्ष 12 वीं की परीक्षा मे टॉप किया था जिस कारण उसे छात्रवृति मिली औऱ शहर जाकर आगे की पढ़ाई करने का मौका भी।

तब गुरुजी के दिशा निर्देश से विजय ने शहर के बड़े कॉलेज मे दाखिला लिया औऱ कृषि मे ही स्नातक और उच्च शिक्षा लेने का फैसला किया। विजय के चले जाने के बाद भी आसिफ खान ने विजय की बहन औऱ उसके बाबा का ख्याल रखा। आखिरकार दस साल बाद विजय वापस अपने गांव लौटा लेकिन अकेला नही बल्कि अपने 5 साथियों को साथ लेकर, जो विजय के कहने पर उसके गांव मे कृषि के क्षेत्र मे काम करने आए थें। ताकि विजय के साथ मिलकर गांव मे कृषि विद्धालय खोलें और गांव वालो को कृषि के गुण सिखाएँ। इसी सपने को साथ लिए पूरे उत्साह के साथ विजय अपने गांव वापस तो आ गया लेकिन आते ही उसे पता चला कि कुछ दिन पहले अचानक ही विजय के गुरुजी अर्थात आसिफ खान का इंतकाल(स्वर्गवास) हो गया।

विजय इस बात को लेकर बहुत दुखी था और अपने परिवार को शहर लेकर जाना चाहता था। तब विजय की बहन ने उसे समझाया कि अगर वो गुरुजी की गुरुदक्षिणा का कर्ज सचमुच उतारना चाहता है तो उसे गांव मे ही रहकर अपना और गुरुजी का सपना पुरा करना होगा और अपनी मेहनत से गांव के खेतो को इस तरह सींचना होगा कि गांव का कोई किसान खराब फसल की मार से बेबस होकर अपनी जान न दें। बहन की इन बातो ने विजय के तन मन मे एक नया जोश भर दिया। विजय के बाबा और उसके सभी दोस्तो ने इस काम मे उसे हर संभव मदद देने का वायदा किया। फिर क्या था विजय ने सरकारी बैंक से लोन लेकर औऱ दोस्तो की मदद से गांव मे कृषि विद्धालय खोला और गांव वालो को कृषि के नए-नए तरीके सीखाएं।

कुछ ही महिनो मे विजय द्वारा की गई मेहनत का फल खेतो मे दिखने लगा जिस कारण आस पास के गांव मे विजय के कृषि विद्धालय की चर्चा होने लगी और चर्चा गांव से शहर, शहर से देश और देश से विदेश तक फैल गई। विजय को अपने काम के लिए अंतरारष्ट्रीय स्तर पर पहचान मिलने लगी और विदेश मे काम करने का मौका भी। लेकिन विजय ने अपने गुरुजी की सिखाई हुई बातों को याद रखा और गांव वालो के लिए अपना जीवन और अपनी शिक्षा को समर्पित कर दिया। बेशक आसिफ खान के गुरु मंत्र और उनके सहयोग ने न सिर्फ विजय के जीवन को बल्कि पूरे गांव की स्थिति को बदल डाला। हाँ, आसिफ खान इस दुनिया से जरुर चले गए, लेकिन विजय के रुप मे वो एक ऐसा दीपक जला गए, जो आज तक पूरे गांव को रोशन कर रहा है।

The author works with Charkha Development Communication Network as an assistant editor. She can be reached at <niku1march@gmail.com>.